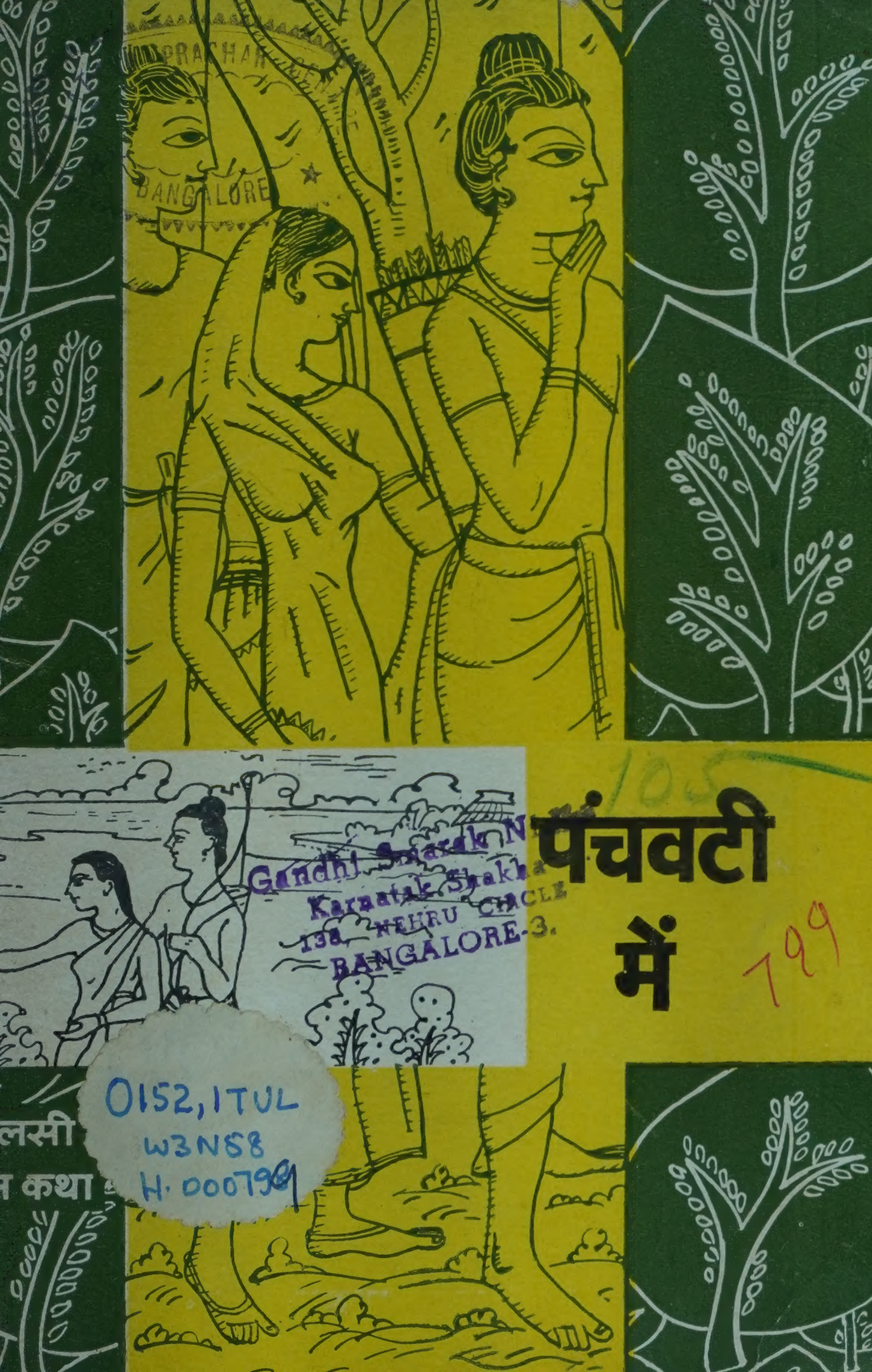


पंचवटी में

...लसी

...कथा

तुलसी-राम-कथा—६

पंचवटी में

विश्वम्भरसहाय 'प्रेमी'

तुलसीदासजी के 'रामचरित-
मानस' के आधार पर
भगवान राम की
सरल एवं रोचक कहानी

सत्साहित्य प्रकाशन
१९५७

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली

प्रकाशकीय

हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जिसने राम का नाम न सुना हो और राम-कथा से परिचित न हो। क्या अमीर, क्या गरीब; क्या छोटा, क्या बड़ा; क्या शहरी, क्या ग्रामीण; सभी राम का नाम सुनकर गद्गद् हो जाते हैं। उनके नाम में कुछ ऐसा जादू है कि एक बार सुनकर तृप्ति नहीं होती, बार-बार सुनने को जी चाहता है।

हमारी बहुत दिनों से इच्छा थी कि राम-कथा के मुख्य-मुख्य प्रसंग लेकर इस ढंग से प्रस्तुत करें कि सामान्य पढ़े-लिखे पाठक भी उन्हें आसानी से समझ सकें और उसमें रस ले सकें। इसी उद्देश्य को सामने रखकर इस पुस्तकमाला का श्रीगणेश किया जा रहा है। 'रामायण' में पूरी राम-कथा दी हुई है। उसीमें से क्रमबद्ध घटनाएं लेकर ये पुस्तकें तैयार की गई हैं। पाठकों के लाभ और विषय की रोचकता की दृष्टि से बीच-बीच में कुछ चौपाइयां-दोहे भी डाल दिये गए हैं।

हमें विश्वास है कि यह माला पाठकों को पसंद आयगी और वे इसको घर-घर पहुंचाने में मदद देंगे।

प्रत्येक पुस्तक में कुछ चित्र भी दिये गए हैं।

—मंत्री

विषय-सूची

पंचवटी में

: १ :

अनुसूया के उपदेश

भरतजी के लौट जाने के बाद रामचंद्रजी कुछ समय चित्रकूट में और रहे लेकिन फिर उन्होंने अपने मन में सोचा कि मुझे सब लोग जान गये हैं। अयोध्यावासियों को भी मेरे यहां रहने का पता चल गया है। जब उनका मन होगा आ सकेंगे। इसलिए अब यहां रहना ठीक नहीं।

यह सोचकर उन्होंने मुनियों से विदा मांगी और आगे चल पड़े। कुछ दूर पर मुनिवर अत्रि का आश्रम था।

अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ।
सुनत महामुनि हरषित भयऊ॥
पुलकित गात अत्रि उठि धाए।
देखि रामु आतुर चलि आए॥
करत दंडवत मुनि उर लाए।
प्रेम बारि द्वौ जन अन्हवाए॥

जब श्री राम वहां पहुंचे तो उनके आने की खबर सुनकर अत्रि मुनि हर्ष से भर उठे। उनका शरीर पुलकित हो आया। श्रीराम से मिलने को वह उठकर दौड़े। उनको दौड़ते देखकर राम भी तेजी से आगे बढ़े और उन्हें दण्डवत करने लगे।

तब दण्डवत करते हुए राम को उठाकर अत्रि मुनि ने हृदय

से लगा लिया। उन्होंने प्रेम के आंसुओं के जल से दोनों भाइयों को नहला दिया।

देखि राम छवि नयन जुड़ाने।
सादर निज आश्रम तब आने॥
करि पूजा कहि वचन सुहाए।
दिये मूल फल प्रभु मन भाए॥

श्री राम की छवि को देखकर अत्रि मुनि के नेत्र शीतल हो गये। वह उनको आदरसहित अपने आश्रम में लाये। उनकी पूजा की। मीठे-मीठे सुंदर वचन कहे और खाने के लिए मूल तथा फल दिये। वे मूल और फल श्री राम को बहुत अच्छे लगे। आसन पर विराजमान श्रीराम को देख-देखकर मुनिश्रेष्ठ अत्रि बहुत पुलकित हुए और स्तुति करने लगे--"हे कृपालु ! मैं आपको नमस्कार करता हूं। आपका पराक्रम असीम है। आप सूर्य-वंश के भूषण, महादेवजी का धनुष तोड़नेवाले और तीनों लोकों के स्वामी हैं। आप मुनियों और संतों को आनंद देनेवाले हैं। आप एक अद्भुत प्रभु, इच्छारहित ईश्वर, व्यापक, जगदगुरु, सनातन और केवल हैं। मैं आपको प्रणाम करता हूं। मुझपर प्रसन्न होइए।"

अनुसुइया के पद गहि सीता।
मिली बहोरि सुसील विनीता॥
रिषि पतिनी मन सुख अधिकाई।
आसिष देइ निकट बैठाई॥
दिव्य बसन भूषन पहिराए।
जे नित नूतन अमल सुहाए॥

फिर परम शीलवती और विनम्र सीताजी ने अनुसूया के पैर छुये। अनुसूया के मन में इससे बड़ा सुख हुआ। उन्होंने सीता

को आसीस देकर अपने पास बैठा लिया और ऐसे वस्त्र और आभूषण दिये जो सदा निर्मल और सुहावने बने रहते हैं।



"अनुसूया के पद गहि सीता।"

उन्होंने सीताजी को नारीधर्म के बारे में सुंदर उपदेश दिया। जैसे कोई माता अपनी पुत्री को समझाती हो, इस तरह से अनुसूया ने सीताजी को समझाया।

मातु पिता भ्राता हितकारी।
मितप्रद सब सुनु राजकुमारी॥
अमित दानि पती वैदेही।
अधम सो नारि जो सेव न तेही॥

—हे राजकुमारी सुनो! माता, पिता और भाई सभी भलाई करनेवाले हैं, लेकिन ये एक सीमा तक ही फल देते हैं, और पति

असीम फल का देनेवाला है। वह बड़ा भारी दानी है। वह स्त्री अधम है जो ऐसे पति की सेवा नहीं करती।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपद काल परिखिअहि चारी॥
वृद्ध रोगबस जड़ धनहीना।
अंध बधिर क्रोधी अति दीना॥
ऐसेहु पति कर किए अपमाना।
नारि पाव जमपुर दुख नाना॥
एकइ धर्म एक ब्रत नेमा।
काय वचन मन पतिपद प्रेमा॥

अनुसूया कहने लगीं, "धीरज, धर्म, मित्र और पत्नी इन चारों की परीक्षा विपत्ति के समय होती है। बूढ़ा, रोगी, मूर्ख, गरीब, अंधा, बहिरा, क्रोधी और बहुत दीन पति का भी अपमान करके स्त्री यमपुर में तरह-तरह के दुख पाती है। स्त्री के लिए यही एक धर्म, यही एक व्रत और यही एक नियम है कि वह शरीर, वचन और मन से अपने पति के चरणों में प्रेम रखे।

अनुसूया ने सीता को बताया कि चार तरह की पतिव्रताएं होती हैं। सबसे उत्तम पतिव्रता वह है, जो सपने में भी दूसरे पुरुष का ध्यान नहीं करती। उसके मन में केवल अपना पति ही बसा रहता है। मध्यम श्रेणी की पतिव्रता वह है जो पराये पति को अपने सगे भाई, पिता और बेटे की तरह देखती है, अर्थात् जो बड़ा है उसे पिता के समान, जो समान अवस्था का है, उसे भाई की तरह और छोटे को पुत्र के रूप में देखती है। धर्म और कुल की मर्यादा का ध्यान रखकर जो बची रहती हैं वे स्त्रियां नीची श्रेणी की होती हैं। और जो स्त्री मौका

न मिलने के कारण या डर के कारण पतिव्रता बनी रहती है संसार में उसे अधम कहते हैं। पति को धोखा देनेवाली स्त्री युगों तक नरक में पड़ी रहती है। यह कहकर अनुसूयाजी बोलीं "हे सीता, यह कथा तो मैंने संसार के भले के लिए कही है। तुम्हें तो श्रीराम प्राणों के समान प्यारे हैं। तुम्हारा तो नाम लेकर ही संसार की स्त्रियां पातिव्रत-धर्म का पालन करेंगी।"

सुनि जानकी परम सुखु पावा।
सादर तासु चरन सिरु नावा॥
तब मुनि सन कह कृपा निधाना।
आयसु होइ जाउ बन आना॥
संतत मोपर कृपा करेहू।
सेवक जानि तजेहु जनि नेहू॥

अनुसूया की बात सुनकर सीताजी को बड़ा सुख मिला। बड़े आदर के साथ उन्होंने अनुसूया के चरणों में सिर नवाया। उसके बाद श्रीराम ने अत्रि मुनि से आगे जाने की आज्ञा मांगी, बोले, "हे मुनि! अगर आप आज्ञा दें तो मैं दूसरे वन में जाऊं। मुझपर सदा अपनी कृपा बनाये रखिए। मुझे अपना सेवक समझकर अपना प्रेम न छोड़िए।"

श्रीराम के ऐसे वचन सुनकर अत्रि मुनि प्रेमपूर्वक बोले, "मैं कैसे कहूं कि आप अब जायं।" ऐसा कहकर वह धीर मुनि प्रभु को भक्ति भाव से एकटक देखने लगे। उनके नेत्रों में जल बहने लगा। शरीर पुलक उठा। तब देवता, मनुष्य और मुनियों के स्वामी श्री राम मुनि अत्रि के कमलरूपी चरणों में सिर नवाकर आगे वन को चले।

मुनि पद कमल नाइ करि सीसा।
चले बनहि सुर नर मुनि ईसा॥

आगे राम अनुज मुनि पाछें।
मुनि वर वेष बने अति काछें॥
उभय बीच श्री सोहइ कैसी।
ब्रह्म जीव विच माया जैसी॥
सरिता बन गिरि अवघट घाटा।
पति पहिचानि देहिं बर बाटा॥
जहं जहं जाहि देव रघुराया।
करहिं मेघ तहं तहं नभ छाया॥

—आगे राम और पीछे लक्ष्मणजी हैं। दोनों मुनियों के जैसा सुंदर वेष बनाये हुए हैं। इन दोनों के बीच में सीताजी इस तरह से लग रही है जैसे ब्रह्म और जीव के बीच में माया हो।

—नदी, बन, पहाड़ और भारी-भारी घाटियां सभी अपने स्वामी श्रीराम को पहचानकर सुंदर रास्ता दे देते हैं। जहां-जहां श्रीराम जाते हैं, वहां-वहां बादल आकाश में छाया करते जाते हैं।

: २ :

राम की प्रतिज्ञा

इस प्रकार जाते हुए रास्ते में विराध नाम का राक्षस मिला। श्री राम ने उसे तुरंत मार डाला और आगे बढ़ गये। कुछ देर बाद वे शरभंगजी के आश्रम में पहुंच गये। उनके दर्शन पाकर ऋषि बड़े प्रसन्न हुए। वह बड़े योगी थे और उनकी ही राह देख रहे थे। उन्होंने कहा, "आपने दीन जानकर मुझपर कृपा की है। यह आपका अहसान नहीं है। आपने अपने प्रण की रक्षा की है। अब आप आ गये हैं तो कृपा कर तबतक ठहरिए

जबतक मैं शरीर त्याग कर आपमें समा न जाऊं।" इतना कहकर मुनि शरभृंग चिता पर जा बैठे और योग-ध्यान में मगन हो गये। उन्होंने योग की आग में अपने शरीर को जला दिया और इस तरह बैकुंठधाम चले गये। उन्होंने अंतिम समय यही इच्छा प्रकट की——

सीता अनुज समेत प्रभु, नील जलद तनु स्याम।
मम हिय बसहु निरंतर, सगुन रूप श्रीराम ॥

——हे नीलकमल के समान श्यामले शरीरवाले राम, आप सीता और अपने अनुज लक्ष्मणसहित मेरे हृदय में सदा ही निवास कीजिए।

ऋषि शरभृंग के इस प्रकार शरीर छोड़कर परलोक जाने को देखकर उनके आश्रय में रहनेवाले मुनि लोग अपने-अपने



सभीने शरणागत-रक्षक दयालु राम का जय-जयकार किया।

हृदय में बड़े प्रसन्न हुए। वे सब रामचंद्रजी की स्तुति करने लगे। सभीने शरणागत के रक्षक, दयालु राम का जय-जयकार किया।

रिसि निकाय मुनिवर गति देखी ।
सुखी भयें निज हृदय बिसेखी ।।
अस्तुति करहिं सकल मुनि बृन्दा ।
जयति प्रनतहित करुनाकंन्दा ।।

—यहां से राम आगे चले। उनके साथ मुनियों की टोली भी थी। रास्ते में एक स्थान पर श्री रामचंद्र ने हड्डियों का एक ढेर देखा। उसे देखकर उन्हें बड़ी दया आई। उन्होंने मुनियों से पूछा, "यह कैसे हुआ ?" मुनियों ने राम को बताया कि राक्षसों ने सब मुनियों को खा डाला है। ये हड्डियां उनकी ही हैं।" यह सुनकर श्रीराम को बड़ा दुख हुआ। उनकी आंखों में आंसू भर आये।

पुनि रघुनाथ चले बन आगे ।
मुनिवर-बृन्द बिपुल संग लागे ।।
अस्थि समूह देखि रघुराया ।
पूछा मुनिन्ह लागि अति दाया ।।
निसिचर-निकर सकल मुनि खाये ।
सुनि रघुनाथ नयन जल छाये ।।

मुनियों ने श्रीराम को बन के वे सब स्थान दिखाये जहांपर राक्षसों ने उनके दूसरे साथियों को मार डाला था और उनकी हड्डियां वहांपर पड़ी थीं। राम को यह विश्वास हो गया कि मुनियों के साथ राक्षसों ने बड़ा अत्याचार किया है। ऐसी दशा में राम ने उन मुनियों को सांत्वना दी।

निसिचरहीन करउं महि भुज उठाइ पन कीन्ह ।

सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह ।।

श्रीराम ने भुजा उठाकर प्रतिज्ञा की कि मैं इस भूमि को बिना राक्षसों की करके छोड़ूंगा। उन्होंने वन के सब मुनियों को उनके आश्रमों में जा-जाकर सुख पहुंचाया।

: ३ :

मुनि अगस्त से भेंट

अगस्त मुनि के शिष्य सुतीक्षण की राम में बड़ी प्रीति थी। उनके आगमन का समाचार पाकर वह दौड़े हुये आये। प्रेम के कारण उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं रहा था। वह कभी पीछे घूम जाते, फिर आगे चलने लगते। कभी प्रभु के गुण गा-गाकर नाचने लगते।

अबिरल प्रेम भगति मुनि पाई।
प्रभु देखै तरुओट लुकाई ।।
अतिसय प्रीति देखि रघुबीरा।
प्रगटे हृदय हरन मन पीरा ।।

——मुनि ने राम की महान भक्ति पाली। श्री राम एक पेड़ के पीछे खड़े होकर मुनि की भक्ति को देखने लगे। मुनि की अपार भक्ति को देखकर रामचंद्रजी, जो संसार के दुखों का नाश करनेवाले हैं, मुनि के हृदय में प्रगट हुए। दर्शन पाकर मुनि रास्ते में अचल होकर बैठ गये। राम ने उन्हें बहुत जगाया पर वह नहीं जगे। फिर राम चतुर्भुज रूप में प्रगट हुए, तब मुनि व्याकुल होकर उठे। प्रेम से गद्‌गद् होकर मुनि ने राम के दर्शन किये। फिर स्तुति करने लगे।

होइहहिं सुफल आजु मम लोचन।

देखि बदन पंकज भव मोचन ।।
निर्भय प्रेम मगन मुनि ग्यानी ।
कहि न जाइ सो दसा भवानी ।।

मुनि सुतीक्षण कमलरूपी मुखवाले राम का दर्शन करके कहने लगे,"मेरे नेत्र आज सुफल हो गये, जो मैंने राम के दर्शन कर लिये।"

उस समय की मुनि सुतीक्षण की भक्ति और उनके प्रेम का वर्णन नहीं किया जा सकता, क्योंकि राम के प्रेम में अपने-आपको लीन कर दिया था। शिवजी पार्वती से कहते हैं कि मुनि की इस दशा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

मुनि सुतीक्षण की अपार भक्ति से प्रसन्न होकर राम ने कहा "हे मुनि, मैं आपकी भक्ति से बड़ा प्रसन्न हुआ। आप कुछ वर मांगिए, मैं आपको दूंगा।"

तुम्हहिं नीक लागै रघुराई ।
सो मोहि देहु दास सुखदाई ।।
अबिरल भगति बिरति बिग्याना ।
होहु सकल-गुन-ग्यान निधाना ।।
प्रभु जो दीन्ह सो वर मैं पावा ।
अब सो देहु मोहि जो भावा ।।

मुनि सुतीक्षण ने राम के प्रेम में भरकर कहा "हे राम ! आपको जो अच्छा लगे वह दीजिए। मुझे ऐसा वरदान दो जो मेरे लिए सुखदाई हो।"

राम ने मनि से कहा, "तुम अटूट भक्ति, वैराग्य में लीन रहो। तुम ज्ञानी हो जाओ और गुणों में भरपूर रहो।" इसपर मुनि सुतीक्षण कहने लगे, "प्रभु ने जो वर मुझे दिया, वह मैंने पा

लिया, परंतु अब वह वर देने की कृपा करें जो मेरी इच्छा हो।"

अनुज जानकी सहित प्रभु, चाप बान धर राम।
मम हिय-गगन इन्दुइव, बसहु सदा निस्काम ।।

मुनि ने कहा, "हे नाथ, मुझे आपकी भक्ति के सिवाय कुछ नहीं चाहिए। आप, सीताजी और लक्ष्मणजीसहित मेरे हृदय में बसे रहिए। यही एक वरदान है जो मैं चाहता हूं।"

राम ने कहा "ऐसा ही होगा।" इतना कहकर श्रीराम अगस्त मुनि के आश्रम की ओर चले।

बहुत दिवस गुर दरसनु पाए।
भए मोहि एहि आश्रम आए ।।
अब प्रभु संग जाउं गुर पाहीं।
तुम्ह कहं नाथ निहोरा नाहीं ।।
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई।
लिये संग बिहंसे दोउ भाई ।।

मुनि सुतीक्षण कहने लगे, "मुझे गुरु के दर्शन किये बहुत दिन हो गये। मैं इस आश्रम में बहुत दिनों से आया हुआ हूं। अब मैं आपके साथ गुरु के पास जाना चाहता हूं। इसमें हे नाथ ! आपके साथ मैं कोई एहसान नहीं कर रहा हूं।" मुनि की चतुराई को देखकर कृपा के सागर श्रीराम ने उनको साथ ले लिया। दोनों भाई मुनि की चतुराई पर हँसने लगे।

थोड़ी ही देर में सुतीक्षण श्रीराम, लक्ष्मण, और सीता को साथ लिये अपने गुरु अगस्त मुनि के आश्रम में पहुंच गये। सबसे आगे जाकर तुरंत सुतीक्षण ने गुरुजी को राम के पधारने का समाचार सुनाया।

नाथ कोसलाधीस कुमारा।

आए मिलन जगत आधारा ॥
राम अनुज समेत बैदेही ।
निसि दिनु देव जपतहहु जेही ॥

सुतीक्षण कहने लगे, "नाथ ! अयोध्या के राजा दशरथ के कुमार और संसारभर के सहारे श्रीराम अपने छोटे भाई लक्ष्मण और सीताजी के साथ आये हैं । आप रात-दिन उनको जपते रहते हैं ।"

सुनत अगस्ति पुलकि उठि धाए ।
हरि बिलोकि लोचन जल छाए ॥
मुनि पद कमल परे दोउ भाई ।
रिषि अति प्रीति लिये उर लाई ॥

—अगस्त मुनि इस समाचार को सुनकर तुरंत उठकर दौड़े



अगस्त के आश्रम में

भगवान राम को देखकर वह बड़े प्रसन्न हुए। उनकी आंखों से प्रेम का जल बहने लगा। दोनों भाई मुनि के चरण कमलों पर गिर पड़े। उन्होंने दोनों भाइयों को बड़े प्रेम से गले लगा लिया। मुनि ने उनको आश्रम में लाकर आसन पर बिठाया। फिर बहुत प्रकार से उनकी पूजा की।

अगस्त मुनि के आश्रम में और भी बहुत-से मुनि आ गये थे। वे सब राम का दर्शन पाकर बड़े प्रसन्न हुए।

जहं लगि रहे अपर मुनि वृन्दा।
हरषे सब विलोकि सुखकन्दा॥

रामचंद्रजी ने अगस्त मुनि से कहा, "हे मुनिराज! आप जानते ही हैं कि मैं यहां किसलिए आया हूं? आपसे कुछ छिपा नहीं है।"

अब सो मन्त्र देहु प्रभु मोही।
जेहि प्रकार मारौं मुनि-द्रोही॥

—श्री राम कहने लगे, "हे मुनिराज! अब आप वह सलाह दीजिए जिससे मैं मुनियों पर अत्याचार करनेवाले राक्षसों को मार सकूं।"

मुनि मुसकाने सुनि प्रभु वानी।
पूछेहु नाथ मोहिं का जानी॥
तुम्हरेइं भजन प्रभाव अधारी।
जानउं महिमा कछुक तुम्हारी॥

अगस्त मुनि रामचंद्रजी की बात को सुनकर मुस्कराए और पूछने लगे, "हे नाथ, आपने मुझे क्या समझकर यह बात पूछी है? हे पाप के नाश करनेवाले प्रभो, मैं तो आपके ही भजन के प्रभाव से आपकी कुछ महिमा जानता हूं।"

ते तुम्ह सकल लोकपति साईं।
पूंछेहु मोहि मनुज की नाईं॥
यह वर माँगउ कृपा निकेता।
बसहु हृदय श्री अनुज समेता॥
अविरल भगति विरति सतसंगा।
चरन सरोरुह प्रीति अभंगा॥

अगस्त मुनि कहते हैं, "हे प्रभो, आप तो सारे लोकों के स्वामी हैं और आप मुझसे मनुष्य की तरह पूछ रहे हैं ? हे कृपा के सागर, मैं तो आपसे यही वरदान मांगता हूं कि आप सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मण के साथ मेरे हृदय में बसे रहें। मुझे प्रगाढ़ भक्ति, वैराग्य, सत्संग और आपके चरण कमलों में अटूट प्रेम प्राप्त हो।"

इस प्रकार अगस्त मुनि ने श्रीराम के लिए अपार प्रेम प्रकट किया। उन्होंने अपने आश्रम से आगे जाने का स्थान भी उनको बताया।

है प्रभु परम मनोहर ठाऊं।
पावन पंचवटी तेहि नाऊं॥
दंडक वन पुनीत प्रभु करहू।
उग्र साप मुनिवर कर हरहू॥

अगस्तजी ने कहा, "हे प्रभो, एक बड़ा सुंदर पवित्र स्थान है जिसका नाम पंचवटी है। आप दंडक वन को पवित्र कीजिए और मुनि गौतम के कठोर शाप को दूर कीजिए।"

चले राम तब आयसु पाई।
तुरतहि पंचवटी नियराई॥
दिव्य लता द्रुम प्रभु मन भाये।

निरखि राम ते भयउ सुहाये ।।
लषन राम सिय चरन निहारी ।
कानन अघ गा भा सुखकारी ।।

—अगस्त मुनि की आज्ञा पाकर श्रीराम पंचवटी की ओर चल दिये । शीघ्र ही वे पंचवटी के निकट पहुंच गये । राम के उस वन में पहुंचने पर वहां की लताएं, फूल, पत्तियां सभी शोभायमान हो गये । राम, लक्ष्मण और सीता के चरण पड़ने से वह वन बड़ा ही सुख देनेवाला हो गया । वहां उनकी गृद्धराज जटायु से भेंट हुई । उनसे प्रेमपूर्वक बातें करके श्रीराम गोदावरी के समीप पत्तों की कुटी बनाकर रहने लगे



पंचवटी में वास

जब तें राम कीन्ह तहं बासा ।
सुखी भए मुनि बीती त्रासा ।।

गिरि बन नदी ताल छवि छाए।
दिन दिन प्रति अति होहिं सुहाए।।

जिस दिन से रामचंद्रजी ने पंचवटी में निवास किया उसी दिन से मुनियों का सब दुःख दूर हो गया और वे बड़े सुखी हुए। पहाड़, वन, नदी, और तालाब शोभायमान हो उठे। उनमें दिन-दिन और सुंदरता आने लगी। पशु-पक्षी भी बड़े आनंदित हुए। वहां रहते हुए एक दिन लक्ष्मण ने राम से ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, ईश्वर और जीव के बारे में प्रश्न किये। श्रीराम ने उनका बहुत प्रकार से समाधान किया। इस समाधान से लक्ष्मण को बहुत सुख पहुंचा।

यहां राम ने लक्ष्मण को यह भी बताया कि संसार में दुष्ट और साधु दोनों प्रकृति के मनुष्य जन्म लेते हैं। जिनका मन पवित्र है, जो ज्ञानी हैं और भगवान की भक्ति में लगे रहते हैं वे संतजन हैं।

इस अवसर पर राम ने लक्ष्मण को यह भी समझाया कि माया, ईश्वर और अपने-आपको जो नहीं जान पाता, वह जीव कहलाता है। बंधन और मोक्ष के देनेवाला और माया में लिप्त न होनेवाला केवल एक ईश्वर ही है।

माया ईस न आपु कहं, जान कहिय सो जीव।
बन्ध मोच्छ प्रद सर्वपर, माया प्रेरक सीव।।

राम ने लक्ष्मण को भक्ति की महिमा बताते हुए कहा, "भक्ति ही एक ऐसा सुगम मार्ग है जिसके द्वारा मनुष्य मुझको पा सकता है।" राम कहने लगे कि भक्ति पाने के लिए ब्राह्मणों के चरणों में अगाध प्रेम होना चाहिए। प्रत्येक मनष्य को वेदों के अनुसार अपने-अपने कर्म को करते रहना चाहिए।

भगति कै साधन कहेऊं बखानी।

सुगम पंथ मोहिं पावहिं प्रानी ।।
प्रथमहिं बिप्र चरन प्रति प्रीती ।
निज निज कर्म निरत श्रुति रीति ।।

राम किसके बस में रहते हैं, इसका बखान करते हुए राम ने अपने भाई लक्ष्मण को बताया कि संतों के कमलरूपी चरणों में जिनका अत्यंत प्रेम हो, जो मन, वचन और कर्म से राम की आराधना करते हों, "जो गुरु, माता, पिता, भाई, पति और देवता सबकुछ मुझे समझते हों, वे मुझे पा सकते हैं।"

संत चरन-पंकज अति प्रेमा ।
मन-क्रम-बचन भजन दृढ़ नेहा ।।
गुरु पितु मातु बन्धु पति देवा ।
सब मोहि कहं जानै दृढ़ सेवा ।।

: ४ :

शूर्पणखा का प्रपंच

राम, लक्ष्मण और सीता के पंचवटी में बहुत-से दिन इसी प्रकार की चर्चा में बीत गये। उनको वहां किसी प्रकार का कोई कष्ट न था। चारों ओर प्रकृति का सुंदर दृश्य दिखाई पड़ता था।

सूपनखा रावन कै बहिनी ।
दुष्ट हृदय दारुन जसि अहिनी ।।
पंचवटी सो गइ एक बारा ।
देखि बिकल भई जुगल कुमारा ।।

रावण की शूर्पणखा नाम की एक बहन थी। वह नागिन-जैसी भयानक और दुष्ट हृदयवाली थी। एक बार वह पंचवटी में गई।

वह दोनों कुमारों को देखकर व्याकुल हो गई। उसे काम-वासना सताने लगी।

रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई।
बोली वचन बहुत मुसुकाई॥
तुम्ह सम पुरुष न मोइ सम नारी।
यह संजोग विधि रचा विचारी॥
मम अनुरूप पुरुष जग नाहीं।
देखेउं खोजि शोक तिहु नाहीं॥
तातें अब लगि रहिउं कुमारी।
मनु माना कछु तुम्हहि निहारी॥



तुम्ह सम पुरुष न मोइ सम नारी

शूर्पणखा बहुत सुंदर रूप बनाकर रामचंद्रजी के पास

आई। वह खूब हँस-हँसकर कहने लगी, "तुम्हारे जैसा तो दूसरा पुरुष नहीं है और मेरे जैसी दूसरी स्त्री नहीं है। विधाता ने यह जोड़ा बहुत सोच-विचारकर रचा है। मेरे लायक पुरुष संसार भर में नहीं है। मैंने तीनों लोकों में ढूंढ़कर देखा है। इसी कारण मैं अबतक कुमारी हूं। अब तुम्हें देखकर मेरे मन को कुछ तसल्ली हुई है।"

सीतहि चितइ कही प्रभु बाता।
अहइ कुमार मोर लघु भ्राता॥
गइ लछिमन रिपुभगिनी जानी।
प्रभु बिलोकि बोले प्रभु बानी॥

श्रीराम ने सीता की ओर देखकर कहा, "मेरा छोटा भाई कुमार है।" इतना सुनकर शूर्पणखा लक्ष्मणजी के पास गई। लक्ष्मण ने उसे दुश्मन की बहन समझते हुए, श्रीराम की ओर देखकर मीठे शब्दों में कहा —

सुन्दरि सुनु मैं उन्ह कर दासा।
पराधीन नहिं तोर सुपासा॥
प्रभु समर्थ कोसलपुर राजा।
जो कछु करहिं उनहि सब छाजा॥

"सुंदरी सुनो, मैं उनका दास हूं। मैं पराधीन हूं। इसलिए मेरे साथ तुम्हारा भला नहीं होगा। प्रभु सामर्थ्यवान हैं। वह अयोध्या के राजा हैं। वह जो कुछ करेंगे उनको सब फबता है।"

सेवक सुख चह मान भिखारी।
व्यसनी धन सुभ गति बिभिचारी॥
लोभी जसु चह चार गुमानी।
नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी॥

"सेवक सुख चाहे, भिखारी आदर चाहे, बुरे कामों के करने-वाला धन चाहे, दुराचारी अच्छी गति चाहे, लोभी यश चाहे, दूत घमंडी होकर अपने स्वामी की भलाई चाहे तो समझना चाहिए कि ये सब आसमान को दुह कर दूध लेना चाहते हैं।"

पुनि फिरि राम निकट सो आई।
प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई॥
लछिमन कहा तोहि सो बरई।
जो तृन तोरि लाज परि हरई॥

लक्ष्मणजी के पास से लौटकर शूर्पणखा रामचंद्रजी के पास आई। राम ने उसे फिर लक्ष्मण के पास भेज दिया। अब की बार लक्ष्मण ने कहा "तुझसे तो वही विवाह कर सकता है जो शर्म को तिनके की तरह तोड़कर तज देगा।"

तब खिसिआनि राम पहिं गई।
रूप भयंकर प्रगटत भई॥
सीतहिं सभय देखि रघुराई।
कहा अनुज सन सयन बुझाई॥

लक्ष्मण की बात सुनकर शूर्पणखा खिसियाकर राम के पास गई। अब उसने अपना डरावना रूप दिखाया। सीता को डरी हुई देखकर श्रीराम ने लक्ष्मण को इशारे से समझा दिया।

लछिमन अति लाघव सो, नाक कान बिनु कीन्हि।
ताके कर रावन कहें मनो चुनौती दीन्हि॥

लक्ष्मण ने बड़ी फुर्ती से शूर्पणखा को बिना नाक और कान के कर दिया। मानो ऐसा करके उन्होंने उसके हाथों रावण को चुनौती दे डाली।

नाक-कान कट जाने पर शूर्पणखा बड़ी डरावनी हो गई।

उसके शरीर से खून ऐसे बहने लगा, जैसे काले पहाड़ से गेरू की लाल धारा बहती हो।

: ५ :

खर-दूषण-वध

शूर्पणखा विलाप करती हुई अपने भाई खर और दूषण के पास गई। वह कहने लगी, "हे भाई ! तुम्हारी वीरता को धिक्कार है, तुम्हारे बल को धिक्कार है।"

खर दूषन पहिं गई बिलपाता।
धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता॥

उन्होंने सारी बात पूछी। शूर्पणखा ने सब बातें समझाकर कह दीं। उसकी बातें सुनकर राक्षसों ने सेना तैयार की। शूर्पणखा को आगे कर वे तरह-तरह की सवारियों पर चढ़कर लड़ने को चल दिये।

कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई।
धरि मारहु तिय लेहु छुड़ाई॥
धूरि पूरि नभ-मंडल रहा।
राम बुलाइ अनुज सन कहा॥

कोई कहने लगा कि दोनों भाइयों को जीता ही पकड़ लो। कोई कह रहा था कि पकड़कर मार डालो और स्त्री छीन लो। उनके चलने से सारा आकाश धूल से भर गया। राम यह देखकर समझ गये कि राक्षस बड़ी संख्या में आ रहे हैं। वह सचेत हो गये। उन्होंने लक्ष्मण से कहा —

लै जानकिहि जाहु गिरिकंदर।
आवा निसिचर कटकु भयंकर॥

रहेहु सजग मुनि प्रभु कै बानी।
चले सहित सिय सर धनु पानी ।।

"जानकी को लेकर तुम पहाड़ की गुफा में चले जाओ। राक्षसों की बड़ी भारी सेना इकट्ठी होकर आ गई है। तुम साव-धान रहना।" रामचंद्रजी की आज्ञा पाकर लक्ष्मण सीतासहित हाथ में धनुष-बाण लिये वहां से चल दिये।

देखि राम रिपुदल चलि आवा।
बिहँसि कठिन कोदंड चढ़ावा।।

राम धनुष-बाण लेकर राक्षसों की सेना का मुकाबला करने को तैयार हो गये। धनुष चढ़ाकर उन्होंने जटाजूट कसे। कमर में तरकस, विशाल भुजाओं में धनुष-वाण लेकर राम राक्षसों को ऐसे देखने लगे जैसे सिंह मतवाले हाथियों के समूह को देखता है। "पकड़ो, पकड़ो" पुकारते हुए राक्षसों ने राम को चारों ओर से घेर लिया। लेकिन श्रीराम के रूप को देखकर वे चकित रह गये। उनके ऊपर वे एक भी हथियार न चला सके। खर-दूषण ने अपने मंत्री को बुलाकर कहा—

सचिव बोलि बोले खर दूषन।
यह कोउ नृप बालक नर भूषन।।

यह बालक तो मनुष्यों में श्रेष्ठ हैं और किसी राजा के बालक हैं।

उन्होंने कहा, "हमने बहुत-से नाग, असुर, देवता, मनुष्यादि देखे है, जीते हैं, मारे हैं, पर अबतक इतना सुंदर रूप कभी देखा ही नहीं।"

जद्यपि भगिनी कीन्हि कुरूपा।
बध लायक नहिं पुरुष अनूपा।।

देहु तुरत निज नारि दुराई।
जीअत भवन जाहु दोउ भाई॥
मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु।
तासु वचन सुनि आतुर आवहु॥

खर-दूषण कहने लगे, "यद्यपि इन्होंने हमारी बहन को कुरूप कर दिया है, लेकिन ये सुंदर पुरुष मारने लायक नहीं।" वे अपने दूतों से कहने लगे, "तुम हमारी ओर से उनको जाकर कहो कि वे छिपाई हुई स्त्री हमें दे दें और जीते-जी दोनों भाई अपने घर लौट जायं। इस बात का वे जो उत्तर दें उसे सुनकर तुम जल्दी से लौट आओ।"

खर-दूषण के दूत राम के पास गये और उन्होंने सारी बातें उनसे कहीं। श्रीराम उनकी बातों को सुनकर मुसकराने लगे और बोले।

हम छत्री मृगया बन करहीं।
तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीं॥
रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं।
एक बार कालहु सन लरहीं॥
जद्यपि मनुज दनुज कुल घालक।
मुनि पालक खल सालक बालक॥
जौं न होइ बल घर फिरि जाहू।
समर विमुख मैं हतउं न काहू॥

——हम क्षत्रिय हैं। हम तो वन में शिकार करते हैं और तुम्हारे-जैसे दुष्टों की तलाश में फिरते हैं। हम दुश्मन को बलवान देखकर नहीं डरते, चाहे एक बार मौत ही लड़ने के लिए क्यों न आ जाय। यद्यपि हम मनुष्य हैं परंतु राक्षसों का नाश करनेवाले

और मुनियों की रक्षा करनेवाले हैं। हम बालक हैं परंतु दुष्टों को दण्ड देनेवाले हैं, यदि शक्ति न हो तो घर लौट जाओ। रण में पीठ दिखानेवाले किसीको हम नहीं मारते।

दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ।
सुनि खरदूषन उर अति दहेऊ॥

दूत वापस लौट आये और श्रीराम की सारी बातें उन्होंने खर-दूषण से कह दीं। वे क्रोध में भर उठे, उनका कलेजा जलने लगा। उन्होंने श्रीराम पर धावा बोल दिया। कहा, "पकड़ लो।" और भयानक राक्षस योद्धा तरह-तरह के अस्त्र लेकर दौड़े। अकेले राम उस राक्षस-सेना से भिड़ गये। उन्होंने पहले धनुष का टंकार किया, जिसे सुनकर राक्षस बहरे और व्याकुल हो गये। फिर क्रुद्ध होकर उन्होंने जोर का आक्रमण किया। राम ने तुरंत उनके हथियार काट डाले। फिर फुफकारते हुए सर्प के समान बाण छोड़ने लगे। राक्षस कट-कटकर गिरने लगे। कहीं हाथ, कहीं पैर, कहीं छाती, कहीं सिर। आकाश में सिर-ही-सिर और भुजाए-ही-भुजाएं उड़ने लगीं। बड़ा भयानक दृश्य था। योद्धा गिरते, फिर उठकर लड़ते, माया रचते। श्रीराम ने जब यह देखा कि राक्षस लोग बड़ी तादाद में हैं और उनके मरने में बहुत देर लगेगी तो उन्होंने ऐसी माया रची कि राक्षस एक दूसरे को राम-रूप देखने लगे। इस तरह से वे आपस में ही मर-कट गये। राम ने खर और दूषण दोनों को अपने तेज बाणों से मार डाला।

हर्षित बर्षहिं सुमन सुर, गाजहिं गगन निसान।
अस्तुति करि करि सुर चले, सोभित बिबिध विमान॥

राक्षसों को मार डालने की खबर सुनकर मुनि लोग बड़े

प्रसन्न हुए। देवताओं ने बड़ा हर्ष मनाया। वे अपने-अपने विमानों में बैठकर अपने-अपने स्थानों को चले गये।

जब रघुनाथ समर रिपु जीते।
सुर नर मुनि सब के भय बीते॥
तब लछिमन सीतहि लई आए।
प्रभु पद परत हरषि उर लाए॥

जब राम ने दुश्मनों को लड़ाई में जीत लिया तो देवता, मनुष्य और मुनि सबका डर जाता रहा। लक्ष्मण सीताजी को गुफा से बाहर ले आये और श्रीराम के चरणों में गिर पड़े। राम ने लक्ष्मण को उठाकर गले से लगा लिया। सीताजी तब श्रीराम के श्याम और कोमल शरीर को बड़े प्रेम से निहारने लगीं। उनकी आंखें अघाती नहीं थीं।

पंचवटी बसि श्री रघुनायक।
करत चरित सुर मुनि सुखदायक॥

रामचंद्रजी सीता के साथ पंचवटी में वास करके ऐसे काम करने लगे कि जिनसे देवताओं और मुनियों को सुख मिले।

: ६ :

रावण के दरबार में

अपने भाई खर और दूषण के मर जाने पर शूर्पणखा बड़ी बेचैन हुई। अब वहां उसकी सुधि लेनेवाला कोई भी न था। ऐसी दशा में वह कुछ भी उपाय न सोच पाती थी। अंत में उसने अपने भाई रावण के पास जाने का विचार किया।

धुआं देखि खर दूषन केरा।
जाइ सूर्पनखा रावन प्रेरा॥

बोली बचन क्रोध करि भारी।
देस कोस कै सुरति बिसारी।।
करसि पान सोवति दिनु राती।
सुधि नहिं तव सिर पर आराती।।

खर और दूषण का विध्वंस देखकर शूर्पनखा रावण के पास गई। उसने रावण को भड़काया। वह क्रोध में भरकर कहने लगी, "तूने तो देश और खजाने की सुधि ही भुला दी। तू शराब पीता है और दिन-रात सोता है। तुझे खबर तक नहीं कि दुश्मन तेरे सिर पर है।" वह बोली—"हे रावण

संग ते जती कुमंत्र तें राजा।
मान तें ग्यान पान तें लाजा।।
प्रीति प्रनय बिनु मद तें गुनी।
नासहिं बेगि नीति अस सुनी।।

विषय-संग से संन्यासी, बुरी सलाह से राजा, मान से ज्ञान, मदिरापान से लज्जा, नम्रता के बिना प्रीति, और अहंकार से गुण-वान शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं, ऐसी नीति मैंने सुनी है।"

सभा मांझ परि ब्याकुल बहु प्रकार कहि रोइ।
तोहि जियत दसकंधर मोरि कि असि गति होइ।।

शूर्पणखा रावण के दरबार में व्याकुल हो उठी। वह तरह-तरह से रोने लगी, कहने लगी, "हे रावण, तुम्हारे जीते-जी मेरी ऐसी दशा हो?"

सुनत सभासद उठे अकुलाई।
समुझाई गहि बांह उठाई।।
कह लंकेस कहसि निज बाता।
केइं तव नासा कान निपाता।।

शूर्पणखा की बात सुनकर सभासद घबड़ा उठे। उन्होंने शूर्प-

णखा की बांह पकड़कर उठाया और उसे समझाया। रावण ने उससे कहा, "तू अपनी बात तो बता कि तेरे नाक और कान किसने काट लिये।"

अवध नृपति दसरथ के जाए।
पुरुष सिंघ बन खेलन आए॥
समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी।
रहित निसाचर करिहिं धरनी॥

शूर्पणखा कहने लगी, "अवध के राजा दशरथ के पुत्र, जो पुरुषों में सिंह की तरह है, बन में शिकार खेलने आये हैं। मुझे तो ऐसा जान पड़ा कि वे राक्षसों को मार डालेंगे। उनकी भुजाओं के बल पर मुनि वन में निर्भय होकर घूमने लगे हैं। वे देखने में बालक हैं, लेकिन वैसे काल की तरह हैं। वे दोनों भाई बड़े बलशाली हैं। वे राक्षसों को मारने में लगे हुए हैं।

सोभाधाम राम अस नामा।
तिन्हके संग नारि एक स्यामा॥
रूपरासि बिधि नारि संवारी।
रति सत कोटि तासु बलिहारी॥
तासु अनुज कांटे श्रुति नासा।
सुनि तव भगिनि करहिं परिहासा॥

"शोभा के धाम जो है, उनका नाम 'राम' है। उनके साथ एक सुंदर स्त्री है। विधाता ने उस स्त्री को ऐसा सुंदर बनाया है कि सौ करोड़ कामदेव की स्त्रियां भी उसपर न्यौछावर हो जायं। उनके छोटे भाई ने मेरे नाक-कान काटे हैं। मैं तेरी बहन हूं। यह बात सुनकर वे मेरी मजाक करने लगे।

खर दूषन सुनि लगे पुकारा।
छन महं सकल कटक उन्ह मारा॥

तुलसी-राम-कथा-माला की पुस्तकें

१. रामजन्म
२. धनुष-यज्ञ
३. राम-विवाह
४. राम-वनगमन
५. भरत-भेंट
६. पंचवटी में
७. सीता-हरण
८. राम-सुग्रीव-मित्रता
९. सीता की खोज
१०. लंकादहन
११. लक्ष्मणशक्ति

आदि-आदि

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना